اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنۡ كَانَ يَرۡجُوۡا

सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं[222] मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है[223] तो जिसे अपने रब से

لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ع

ع ٢ ١٢

मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे[224]

اٰياتها ٩٨ | ١٩ سُوۡرَةُ مَرۡيَمَ مَكِّيَّةٌ ٤٤ | رکوعاتها ٦

सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में अठानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़म वाला[1]

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ۚ ذِكۡرُ رَحۡمَتِ رَبِّكَ عَبۡدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ ۖ اِذۡ نَادٰى رَبَّهٗ

येह मज़्कूर है तेरे रब की उस रहमत का जो उस ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की जब उस ने अपने रब को

पानी सियाही बना दिया जाए और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वोह कलिमात ख़त्म न हों और येह तमाम पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए। मुद्दआ़ येह है कि उस के इल्मो ह़िक्मत की निहायत (इन्तिहा) नहीं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने इ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) आप का ख़याल है कि हमें ह़िक्मत दी गई और आप की किताब में है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई, फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि जब आयए "وَمَآ اُوۡتِيۡتُمۡ مِّنَ الۡعِلۡمِ اِلَّا قَلِيۡلًا" नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरैत का इल्म दिया गया और इस में हर शै का इल्म है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। मुद्दआ़ येह है कि कुल शै का इल्म भी इल्मे इलाही के ह़ुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़त़रे को समुन्दर से हो। **222 :** कि मुझ पर बशरी आ'राज़ व अमराज़ त़ारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आप का मिस्ल नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ह़ुस्नो सूरत में भी सब से आ'ला व बाला किया और ह़क़ीक़त व रूह़ व बात़िन के ए'तिबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आ'ला हैं जैसा कि शिफ़ाए क़ाज़ी इ़याज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शर्ह़े मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के अज्साम व ज़वाहिर तो ह़द्दे बशरिय्यत पर छोड़े गए और उन के अरवाह़ व बवात़िन बशरिय्यत से बाला और मलाए आ'ला से मुतअ़ल्लिक़ हैं। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने सूरए وَالضُّحٰی की तफ़्सीर में फ़रमाया कि आप की बशरिय्यत का वुजूद अस्लन न रहे और ग़लबए अन्वारे ह़क़ आप पर अ़लद्दवाम ह़ासिल हो। बहर ह़ाल आप की ज़ात व कमाल में आप का कोई भी मिस्ल नहीं। इस आयते करीमा में आप को अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिय्या के बयान का इज़्हारे तवाज़ोअ़ के लिये ह़ुक्म फ़रमाया गया, येही फ़रमाया है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने। (خازن) **मस्अला :** किसी को जाइज़ नहीं कि ह़ुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्यूं कि जो कलिमात अस्ह़ाबे इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ फ़रमाते हैं उन का कहना दूसरों के लिये रवा (जाइज़) नहीं होता। दुवुम येह कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ़ अ़त़ा फ़रमाए हों उस के उन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आ़म से ज़िक्र करना जो हर किह व मिह (छोटे, बड़े, अदना व आ'ला) में पाया जाए उन कमालात के न मानने का मुश्इर (इशारा देता) है। सिवुम येह कि क़ुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा बताया गया है कि वोह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और इसी से गुमराही में मुब्तला हुए। फिर इस के बा'द आयत "يُوۡحٰۤى اِلَىَّ" में ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मख़्सूस बिल इल्म और मुकर्रम इ़न्दल्लाह (या'नी उ़लूम के साथ ख़ास होने और **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला) होने का बयान है। **223 :** उस का कोई शरीक नहीं **224 :** शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिस को शिर्के असग़र कहते हैं। मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें ह़िफ़्ज़ करे **अल्लाह** तआ़ला उस को फ़ित्नए दज्जाल से मह़फ़ूज़ रखेगा, येह भी ह़दीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ को पढ़े वोह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहेगा। **1 :** सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, अठानवे आयतें, सात सो अस्सी कलिमे हैं।

www.dawateislami.net

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىۡ وَهَنَ الۡعَظۡمُ مِنِّىۡ وَاشۡتَعَلَ الرَّاۡسُ شَيۡبًا

आहिस्ता पुकारा[2] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई[3] और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा (सफ़ेदी ज़ाहिर हुई)[4]

وَّلَمۡ اَكُنۡ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّىۡ خِفۡتُ الۡمَوَالِىَ مِنۡ وَّرَآءِىۡ

और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी ना मुराद न रहा[5] और मुझे अपने बा'द अपने क़राबत वालों का डर है[6]

وَكَانَتِ امۡرَاَتِىۡ عَاقِرًا فَهَبۡ لِىۡ مِنۡ لَّدُنۡكَ وَلِيًّا ۙ﴿٥﴾ يَّرِثُنِىۡ وَيَرِثُ

और मेरी औ़रत बांझ है तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले[7] वोह मेरा जा नशीन हो और औलादे

مِنۡ اٰلِ يَعۡقُوۡبَ ۖ وَاجۡعَلۡهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

या'क़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर[8] ऐ ज़करिय्या हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं

بِغُلٰمِ اسۡمُهٗ يَحۡيٰى ۙ لَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

एक लड़के की जिन का नाम यह्या है इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे

يَكُوۡنُ لِىۡ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امۡرَاَتِىۡ عَاقِرًا وَّقَدۡ بَلَغۡتُ مِنَ الۡكِبَرِ عِتِيًّا ﴿٨﴾

लड़का कहां से होगा मेरी औ़रत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की ह़ालत को पहुंच गया[9]

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدۡ خَلَقۡتُكَ مِنۡ قَبۡلُ وَلَمۡ

फ़रमाया ऐसा ही है[10] तेरे रब ने फ़रमाया वोह मुझे आसान है और मैं ने तो इस से पहले तुझे उस वक़्त बनाया

تَكُ شَيۡـًٔا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجۡعَلۡ لِّىۡۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

जब तू कुछ भी न था[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे दे[12] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तू तीन रात दिन लोगों

2 : क्यूं कि इख़्फ़ा (आहिस्ता पुकारना) रिया से दूर और इख़्लास से मा'मूर होता है, नीज़ येह भी फ़ाएदा था कि पीराना साली (बुढ़ापे) की उ़म्र में जब कि सिन शरीफ़ पछत्तर या अस्सी बरस का था औलाद का त़लब करना एह़तिमाल रखता था कि अ़वाम इस पर मलामत करें, इस लिये भी इस दुआ़ का इख़्फ़ा (आहिस्ता करना) मुनासिब था। एक क़ौल येह भी है कि ज़ो'फ़े पीरी (बुढ़ापे की कमज़ोरी) के बाइ़स ह़ज़रत की आवाज़ भी ज़ईफ़ हो गई थी। (مدارک خازن) **3 :** या'नी पीराना साली का ज़ो'फ़ ग़ायत (इन्तिहा) को पहुंच गया कि हड्डी जो निहायत मज़बूत उ़ज्व है इस में कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी आ'ज़ा व क़ुवा (ताक़त) का ह़ाल मोह़ताजे बयान ही नहीं। **4 :** कि तमाम सर सफ़ेद हो गया **5 :** हमेशा तू ने मेरी दुआ़ क़बूल की और मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात किया। **6 :** चचाज़ाद वग़ैरा का, कि वोह शरीर लोग हैं, कहीं मेरे बा'द दीन में रख़्ना अन्दाज़ी न करें, जैसा कि बनी इसराईल से मुशाहदे में आ चुका है। **7 :** और मेरे इ़ल्म का ह़ामिल (संभालने वाला) हो **8 :** कि तू अपने फ़ज़्ल से उस को नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाए। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيۡهِ السَّلَام की येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : **9 :** येह सुवाल इस्तिब्आ़द (मुह़ाल जान कर) नहीं बल्कि मक़्सूद येह दरयाफ़्त करना है कि अ़त़ाए फ़रज़न्द किस त़रीक़े पर होगा, क्या दोबारा जवानी मर्ह़मत होगी या इसी ह़ाल में फ़रज़न्द अ़त़ा किया जाएगा ? **10 :** तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है **11 :** तो जो मा'दूम के मौजूद करने पर क़ादिर है उस से बुढ़ापे में औलाद अ़त़ा फ़रमाना क्या अ़जब है। **12 :** जिस से मुझे अपनी बीबी के ह़ामिला होने की मा'रिफ़त हो।

www.dawateislami.net

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ

से कलाम न करे भला चंगा हो कर[13] तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया[14] तो उन्हें इशारे से कहा

اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ

कि सुब्हो शाम तस्बीह़ करते रहो[15] ऐ यह़या किताब[16] मज़बूत़ थाम और हम ने उसे बचपन ही में

صَبِيًّا ﴿١٢﴾ۙ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ۙ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَ

नुबुव्वत दी[17] और अपनी त़रफ़ से मेह़रबानी[18] और सुथराई[19] और कमाल डर वाला था[20] और अपने मां बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और

لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

ज़बर दस्त व ना फ़रमान न था[21] और सलामती है उस पर जिस दिन पैदा हुवा और जिस दिन मरेगा और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾ع وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا ع ١٥ وقف لازم

ज़िन्दा उठाया जाएगा[22] और किताब में मरयम को याद करो[23] जब अपने घर वालों से पूरब (मशरिक़)

مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ۙ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا

की त़रफ़ एक जगह अलग गई[24] तो उन से इधर[25] एक पर्दा कर लिया तो उस की त़रफ़ हम ने अपना

13 : सह़ीह़ सालिम हो कर बिग़ैर किसी बीमारी के और बिग़ैर गूंगा होने के। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि इन अय्याम में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए, जब **अल्लाह** का ज़िक्र करना चाहते ज़बान खुल जाती। **14 :** जो उस की नमाज़ की जगह थी और लोग पसे मेह़राब इन्तिज़ार में थे कि आप उन के लिये दरवाज़ा खोलें तो वोह दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें, जब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام बाहर आए तो आप का रंग बदला हुवा था, गुफ़्तगू नहीं फ़रमा सकते थे, येह ह़ाल देख कर लोगों ने दरयाफ़्त किया क्या ह़ाल है ? **15 :** और ह़स्बे आ़दत फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ें अदा करते रहो। अब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आप की बीवी साह़िबा ह़ामिला हो गईं और ह़ज़रते यह़या عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत से दो साल बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : **16 :** या'नी तौरैत को **17 :** जब कि आप की उ़म्र शरीफ़ तीन साल की थी, इस वक़्त में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने आप को अ़क़्ले कामिल अ़त़ा फ़रमाई और आप की त़रफ़ वह्य की, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का येही क़ौल है और इतनी सी उ़म्र में फ़ह्मो फ़िरासत और कमाले अ़क़्लो दानिश ख़वारिक़े आ़दात (करामात) में से है और जब बि करमिही तआ़ला (**अल्लाह** तआ़ला के करम से) येह ह़ासिल हो तो इस ह़ाल में नुबुव्वत मिलना कुछ भी बईद नहीं, लिहाज़ा इस आयत में ह़ुक्म से नुबुव्वत मुराद है, येही क़ौल सह़ीह़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से ह़िक्मत या'नी फ़ह्मे तौरैत (तौरैत का जानना) और फ़िक़्ह़ फ़िद्दीन (दीन में समझ बूझ) भी मुराद ली है। (خازن ومدارک کبیر) मन्क़ूल है कि इस कमसिनी के ज़माने में बच्चों ने आप को खेल के लिये बुलाया तो आप ने फ़रमाया : "مَالِلّعِبِ خُلِقْنَا" हम खेल के लिये पैदा नहीं किये गए। **18 :** अ़त़ा की और इन के दिल में रिक़्क़त व रह़मत रखी कि लोगों पर मेह़रबानी करें। **19 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि "ज़कात" से यहां त़ाअ़त व इख़्लास मुराद है। **20 :** और आप ख़ौफ़े इलाही से बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे, यहां तक कि आप के रुख़्सारे मुबारक पर आंसूओं से निशान बन गए थे। **21 :** या'नी आप निहायत मुतवाज़ेअ़ और ख़लीक़ (तवाज़ोअ़ करने वाले और ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़) थे और **अल्लाह** तआ़ला के ह़ुक्म के मुत़ीअ़। **22 :** कि येह तीनों दिन बहुत अन्देशा नाक हैं क्यूं कि इन में आदमी वोह देखता है जो इस से पहले इस ने नहीं देखा, इस लिये इन तीनों मौक़ओं पर निहायत वह्शत होती है। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते यह़या عَلَيْهِ السَّلَام का इकराम फ़रमाया कि इन्हें इन तीनों मौक़ओं पर अम्न व सलामती अ़त़ा की। **23 :** या'नी ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क़ुरआने करीम में ह़ज़रते मरयम का वाक़िआ़ पढ़ कर इन लोगों को सुनाइये ताकि इन्हें उन का ह़ाल मा'लूम हो। **24 :** और अपने मकान में या बैतुल मक़्दिस की शर्क़ी जानिब में लोगों से जुदा हो कर इ़बादत के लिये ख़ल्वत (तन्हाई) में बैठीं **25 :** या'नी अपने और घर वालों के दरमियान।

www.dawateislami.net

رُوۡحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتۡ اِنِّىۡۤ اَعُوۡذُ بِالرَّحۡمٰنِ مِنۡكَ

रूहानी भेजा[26] वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा बोली मैं तुझ से रह़मान की पनाह मांगती हूं

اِنۡ كُنۡتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوۡلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

अगर तुझे ख़ुदा का डर है बोला मैं तेरे रब का भेजा हुवा हूं कि मैं तुझे एक सुथरा

زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتۡ اَنّٰى يَكُوۡنُ لِىۡ غُلٰمٌ وَّلَمۡ يَمۡسَسۡنِىۡ بَشَرٌ وَّلَمۡ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

बेटा दूं बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो न किसी आदमी ने हाथ लगाया न मैं बदकार हूं

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجۡعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَ

कहा यूंही है[27] तेरे रब ने फ़रमाया है कि येह[28] मुझे आसान है और इस लिये कि हम इसे लोगों के वासिते निशानी[29] करें और

رَحۡمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمۡرًا مَّقۡضِيًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتۡهُ فَانۡتَبَذَتۡ بِهٖ مَكَانًا

अपनी त़रफ़ से एक रह़मत[30] और येह काम ठहर चुका है[31] अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिये हुए एक दूर जगह

قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَاَجَآءَهَا الۡمَخَاضُ اِلٰى جِذۡعِ النَّخۡلَةِ ۚ قَالَتۡ يٰلَيۡتَنِىۡ مِتُّ

चली गई[32] फिर उसे जनने का दर्द एक ख़जूर की जड़ में ले आया[33] बोली हाए किसी त़रह़ मैं इस से पहले

26 : जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام **27 :** येही मन्ज़ूरे इलाही है कि तुम्हें बिग़ैर मर्द के छूए ही लड़का इनायत फ़रमाए। **28 :** या'नी बिग़ैर बाप के बेटा देना **29 :** और अपनी क़ुदरत की बुरहान (दलील) **30 :** उन के लिये जो उस के दीन का इत्तिबाअ़ करें, उस पर ईमान लाएं **31 :** इल्मे इलाही में, अब न रद हो सकता है न बदल सकता है। जब ह़ज़रते मरयम को इत्मीनान हो गया और उन की परेशानी जाती रही तो ह़ज़रते जिब्रील ने उन के गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वोह ब क़ुदरते इलाही फ़िल्हाल ह़ामिला हो गईं, उस वक़्त ह़ज़रते मरयम की उ़म्र तेरह साल या दस की थी। **32 :** अपने घर वालों से और वोह जगह बैतुल्लह़म थी। वह़ब का क़ौल है कि सब से पहले जिस शख़्स को ह़ज़रते मरयम के ह़म्ल का इ़ल्म हुवा वोह उन का चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार है जो मस्जिदे बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम था और बहुत बड़ा आ़बिद शख़्स था, उस को जब मा'लूम हुवा कि मरयम ह़ामिला हैं तो निहायत ह़ैरत हुई। जब चाहता था कि इन पर तोहमत लगाए तो इन की इ़बादत व तक़्वा, हर वक़्त का ह़ाज़िर रहना, किसी वक़्त ग़ाइब न होना, याद कर के ख़ामोश हो जाता था और जब ह़म्ल का ख़याल करता था तो इन को बरी समझना मुश्किल मा'लूम होता था ! बिल आख़िर उस ने ह़ज़रते मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है, हर चन्द चाहता हूं कि ज़बान पर न लाऊं मगर अब सब्र नहीं होता है, आप इजाज़त दीजिये कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी रफ़्अ़ (दूर) हो। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो ! तो उस ने कहा कि ऐ मरयम ! मुझे बताओ कि क्या खेती बिग़ैर तुख़्म और दरख़्त बिग़ैर बारिश के और बच्चा बिग़ैर बाप के हो सकता है ? ह़ज़रते मरयम ने फ़रमाया कि हां, तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो सब से पहले खेती पैदा की बिग़ैर तुख़्म ही के पैदा की और दरख़्त अपनी क़ुदरत से बिग़ैर बारिश के उगाए, क्या तू येह कह सकता है कि अल्लाह तआ़ला पानी की मदद के बिग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं। यूसुफ़ ने कहा : मैं येह तो नहीं कहता बेशक मैं इस का क़ाइल हूं कि अल्लाह हर शै पर क़ादिर है, जिसे "كُن" फ़रमाए वोह हो जाती है। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि क्या तुझे मा'लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने आदम और उन की बीबी को बिग़ैर मां बाप के पैदा किया ! ह़ज़रते मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबा रफ़्अ़ हो गया और ह़ज़रते मरयम ह़म्ल के सबब से ज़ईफ़ हो गई थीं, इस लिये वोह ख़िदमते मस्जिद में इन की नयाबत अन्जाम देने लगा, अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मरयम को इल्हाम किया कि वोह अपनी क़ौम से अ़लाह़दा चली जाएं, इस लिये वोह बैतुल्लह़म में चली गईं। **33 :** जिस का दरख़्त जंगल में ख़ुश्क हो गया था, वक़्त तेज़ सर्दी का था, आप उस दरख़्त की जड़ में आईं ताकि उस से टेक लगाएं और फ़ज़ीह़त (रुस्वाई व बदनामी) के अन्देशे से।

www.dawateislami.net

قَبۡلَ هٰذَا وَكُنۡتُ نَسۡيًا مَّنۡسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنۡ تَحۡتِهَآ اَلَّا تَحۡزَنِىۡ قَدۡ

मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती तो उसे[34] उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा[35] बेशक

جَعَلَ رَبُّكِ تَحۡتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّىۡۤ اِلَيۡكِ بِجِذۡعِ النَّخۡلَةِ تُسٰقِطۡ

तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है[36] और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी

عَلَيۡكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِىۡ وَاشۡرَبِىۡ وَقَرِّىۡ عَيۡنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

पकी खजूरें गिरेंगी[37] तो खा और पी और आंख ठन्डी रख[38] फिर अगर तू किसी

الۡبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوۡلِىۡۤ اِنِّىۡ نَذَرۡتُ لِلرَّحۡمٰنِ صَوۡمًا فَلَنۡ اُكَلِّمَ الۡيَوۡمَ

आदमी को देखे[39] तो कह देना मैं ने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न

اِنۡسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَاَتَتۡ بِهٖ قَوۡمَهَا تَحۡمِلُهٗ ؕ قَالُوۡا يٰمَرۡيَمُ لَقَدۡ جِئۡتِ شَيۡـًٔا

करूंगी[40] तो उसे गोद में लिये अपनी क़ौम के पास आई[41] बोले ऐ मरयम बेशक तू ने बहुत

فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰۤاُخۡتَ هٰرُوۡنَ مَا كَانَ اَبُوۡكِ امۡرَاَ سَوۡءٍ وَّمَا كَانَتۡ اُمُّكِ

बड़ी बात की ऐ हारून की बहन[42] तेरा बाप[43] बुरा आदमी न था और न तेरी मां[44]

بَغِيًّا ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتۡ اِلَيۡهِ ؕ قَالُوۡا كَيۡفَ نُكَلِّمُ مَنۡ كَانَ فِى الۡمَهۡدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

बदकार इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया[45] वोह बोले हम कैसे बात करें उस से जो पालने में बच्चा है[46]

34 : जिब्रील ने वादी के नशेब से **35 :** अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों की बदगोई करने का **36 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام ने या हज़रते जिब्रील ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो आबे शीरीं का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का दरख़्त सर सब्ज़ हो गया फल लाया वोह फल पुख़्ता और रसीदा (पक कर तय्यार) हो गए और हज़रते मरयम से कहा गया **: 37 :** जो ज़च्चा के लिये बेहतरीन ग़िज़ा हैं। **38 :** अपने फ़रज़न्द ईसा से। **39 :** कि तुझ से बच्चे को दरयाफ़्त करता है **40 :** पहले ज़माने में बोलने और कलाम करने का भी रोज़ा होता था जैसा कि हमारी शरीअ़त में खाने और पीने का रोज़ा होता है, हमारी शरीअ़त में चुप रहने का रोज़ा मन्सूख़ हो गया। हज़रते मरयम को सुकूत (ख़ामोशी इख़्तियार करने) की नज़्र मानने का इस लिये हुक्म दिया गया ताकि कलाम हज़रते ईसा फ़रमाएं और इन का कलाम हुज्जते क़विय्या (मज़बूत दलील साबित) हो जिस से तोहमत ज़ाइल हो जाए। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए **: मस्अला :** सफ़ीह (जाहिल व बे वुक़ूफ़) के जवाब में सुकूत व ए'राज़ चाहिये, جواب جاہلاں باشد خموشی (जाहिलों की बात का जवाब ख़ामोशी है)। **मस्अला :** कलाम को अफ़्ज़ल शख़्स की तरफ़ तफ़्वीज़ करना (फेरना) औला है। हज़रते मरयम ने येह भी इशारे से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी। **41 :** जब लोगों ने हज़रते मरयम को देखा कि इन की गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्यूं कि वोह सालिहीन के घराने के लोग थे और **42 :** और हारून या तो हज़रते मरयम के भाई का नाम था या बनी इसराईल में और निहायत बुज़ुर्ग और सालेह शख़्स का नाम था जिन के तक़्वा और परहेज़ गारी से तश्बीह देने के लिये इन लोगों ने हज़रते मरयम को हारून की बहन कहा या हज़रते हारून बरादरे हज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام ही की तरफ़ निस्बत की बा वुजूदे कि इन का ज़माना बहुत बईद था और हज़ार बरस का अ़र्सा हो चुका था, मगर चूंकि येह उन की नस्ल से थीं इस लिये हारून की बहन कह दिया जैसा कि अ़रबों का मुहावरा है कि वोह तमीमी को **या अख़ा तमीम** कहते हैं। **43 :** या'नी इमरान **44 :** हन्ना **45 :** कि जो कुछ कहना है ख़ुद इन से कहो ! इस पर क़ौम के लोगों को ग़ुस्सा आया और **46 :** येह गुफ़्तगू सुन कर हज़रते ईसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएं हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और दाहने दस्ते मुबारक से इशारा कर के कलाम शुरूअ़ किया।

www.dawateislami.net

قَالَ اِنِّیۡ عَبۡدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰنِیَ الۡكِتٰبَ وَجَعَلَنِیۡ نَبِیًّا ۙ﴿۳۰﴾ وَّ جَعَلَنِیۡ مُبٰرَكًا

बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा[47] उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया[48] और उस ने मुझे मुबारक किया[49]

اَیۡنَ مَا كُنۡتُ ۪ وَاَوۡصٰنِیۡ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمۡتُ حَیًّا ۖ﴿۳۱﴾ وَّ بَرًّا

मैं कहीं होउं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूं और अपनी मां से

بِوَالِدَتِیۡ ۫ وَلَمۡ یَجۡعَلۡنِیۡ جَبَّارًا شَقِیًّا ۚ﴿۳۲﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَیَّ یَوۡمَ وُلِدۡتُّ وَ

अच्छा सुलूक करने वाला[50] और मुझे ज़बर दस्त बद बख़्त न किया और वोही सलामती मुझ पर[51] जिस दिन मैं पैदा हुवा और

یَوۡمَ اَمُوۡتُ وَیَوۡمَ اُبۡعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ عِیۡسَی ابۡنُ مَرۡیَمَ ۚ قَوۡلَ الۡحَقِّ

जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा[52] येह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात

الَّذِیۡ فِیۡهِ یَمۡتَرُوۡنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنۡ یَّتَّخِذَ مِنۡ وَّلَدٍ ۙ سُبۡحٰنَهٗ ؕ

जिस में शक करते हैं[53] अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उस को[54]

اِذَا قَضٰۤی اَمۡرًا فَاِنَّمَا یَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَیَكُوۡنُ ﴿۳۵﴾ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّیۡ وَرَبُّكُمۡ

जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूंही कि उस से फ़रमाता है हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा[55]

فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِیۡمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَیۡنِهِمۡ ۚ

तो उस की बन्दगी करो येह राह सीधी है फिर जमाअ़तें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं[56]

47 : पहले अपने बन्दा होने का इक़रार फ़रमाया ताकि कोई इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्यूं कि आप की निस्बत येह तोहमत लगाई जाने वाली थी और येह तोहमत अल्लाह तबारक व तआ़ला पर लगती थी, इस लिये मन्सबे रिसालत का इक़्तिज़ा येही था कि वालिदा की बराअत बयान करने से पहले उस तोहमत को रफ़्अ़ फ़रमा दें जो अल्लाह तआ़ला की जनाबे पाक में लगाई जाएगी और इसी से वोह तोहमत भी रफ़्अ़ हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस मर्तबए अ़ज़ीमा के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है बिल यक़ीन उस की विलादत और उस की सिरिश्त (फ़ित्रत) निहायत पाक व ताहिर है। **48 :** किताब से इन्जील मुराद है। ह़सन का क़ौल है कि आप बत्ने वालिदा ही में थे कि आप को तौरैत का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आप को नुबुव्वत अ़ता कर दी गई और इस ह़ालत में आप का कलाम फ़रमाना आप का मो'जिज़ा है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत के मा'ना में येह भी बयान किया है कि येह नुबुव्वत और किताब मिलने की ख़बर थी जो अ़न्क़रीब आप को मिलने वाली थी। **49 :** या'नी लोगों के लिये नफ़्अ़ पहुंचाने वाला और ख़ैर की ता'लीम देने वाला और अल्लाह तआ़ला और उस की तौह़ीद की दा'वत देने वाला। **50 :** बनाया **51 :** जो ह़ज़रते यह़या पर हुई **52 :** जब ह़ज़रते ईसा عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह कलाम फ़रमाया तो लोगों को ह़ज़रते मरयम की बराअत व त़हारत का यक़ीन हो गया और ह़ज़रते ईसा عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इतना फ़रमा कर ख़ामोश हो गए और इस के बा'द कलाम न किया जब तक कि उस उ़म्र को पहुंचे जिस में बच्चे बोलने लगते हैं। (خازن) **53 :** कि यहूद तो इन्हें साह़िर, कज़्ज़ाब कहते हैं (مَعَاذَاللّٰه) और नसारा इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं। تَعَالَی اللّٰهُ عَمَّا یَقُوۡلُوۡنَ عُلُوًّا كَبِیۡرًا (अल्लाह बहुत ही बुलन्दो बाला, पाक व मुनज़्ज़ा है उन की बातों से)। इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाता है : **54 :** इस से **55 :** और उस के सिवा कोई रब नहीं **56 :** और ह़ज़रते ईसा के बाब में नसारा के कई फ़िर्क़े हो गए : एक या'क़ूबिया, एक नस्तूरिया, एक मलकानिया। या'क़ूबिया कहता था कि वोह अल्लाह है ज़मीन पर उतर आया था फिर आस्मान पर चढ़ गया। नस्तूरिया का क़ौल है कि वोह ख़ुदा का बेटा है जब तक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया और तीसरा फ़िर्क़ा येह कहता था कि वोह अल्लाह के बन्दे हैं मख़्लूक़ हैं नबी हैं येह मोमिन था। (مدارک)

www.dawateislami.net

فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ مَّشۡهَدِ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۳۷﴾ اَسۡمِعۡ بِهِمۡ وَاَبۡصِرۡ ۙ

तो ख़राबी है काफ़िरों के लिये एक बड़े दिन की हाज़िरी से[57] कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे

يَوۡمَ يَاۡتُوۡنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوۡنَ الۡيَوۡمَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۳۸﴾ وَاَنۡذِرۡهُمۡ

जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे[58] मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं[59] और उन्हें डर सुनाओ

يَوۡمَ الۡحَسۡرَةِ اِذۡ قُضِىَ الۡاَمۡرُ ۘ وَهُمۡ فِىۡ غَفۡلَةٍ وَّهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۹﴾

पछतावे के दिन का[60] जब काम हो चुकेगा[61] और वोह ग़फ़्लत में हैं[62] और वोह नहीं मानते

وقف لازم

اِنَّا نَحۡنُ نَرِثُ الۡاَرۡضَ وَمَنۡ عَلَيۡهَا وَاِلَيۡنَا يُرۡجَعُوۡنَ ﴿۴۰﴾ ع وَاذۡكُرۡ فِى

बेशक ज़मीन और जो कुछ इस पर है सब के वारिस हम होंगे[63] और वोह हमारी ही तरफ़ फिरेंगे[64] और किताब में[65]

الۡكِتٰبِ اِبۡرٰهِيۡمَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيۡقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾ اِذۡ قَالَ لِاَبِيۡهِ يٰۤاَبَتِ

इब्राहीम को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़[66] था ग़ैब की ख़बरें बताता जब अपने बाप से बोला[67] ऐ मेरे बाप

لِمَ تَعۡبُدُ مَا لَا يَسۡمَعُ وَلَا يُبۡصِرُ وَلَا يُغۡنِىۡ عَنۡكَ شَيۡـًٔا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّىۡ قَدۡ

क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए[68] ऐ मेरे बाप बेशक

جَآءَنِىۡ مِنَ الۡعِلۡمِ مَا لَمۡ يَاۡتِكَ فَاتَّبِعۡنِىۡۤ اَهۡدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾

मेरे पास[69] वोह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ[70] मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं[71]

يٰۤاَبَتِ لَا تَعۡبُدِ الشَّيۡطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ

ऐ मेरे बाप शैतान का बन्दा न बन[72] बेशक शैतान रहमान का ना फ़रमान है ऐ मेरे बाप

57 : बड़े दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **58 :** और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़्अ़ न देगा जब उन्हों ने दुन्या में दलाइले हक़ को नहीं देखा और **अल्लाह** के मवाईद को नहीं सुना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह कलाम ब तरीक़े तहदीद (बतौरे तम्बीह और डराने के) है कि उस रोज़ ऐसी होलनाक बातें सुनें और देखेंगे जिन से दिल फट जाएं। **59 :** न हक़ देखें न हक़ सुनें बहरे, अन्धे बने हुए हैं, हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام को इलाह और मा'बूद ठहराते हैं बा वुजूदे कि उन्हों ने ब सराहत अपने बन्दा होने का ए'लान फ़रमाया। **60 :** हदीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वोह महरूम किये गए तो उन्हें नदामत व हसरत होगी कि काश वोह दुन्या में ईमान ले आए होते। **61 :** और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे, ऐसा सख़्त दिन दरपेश है **62 :** और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्र नहीं करते **63 :** या'नी सब फ़ना हो जाएंगे हम ही बाक़ी रह जाएंगे। **64 :** हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे। **65 :** या'नी क़ुरआन में। **66 :** या'नी कसीरुस्सिद्क़ (हमेशा सच बोलने वाले)। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि सिद्दीक़ के मा'ना हैं कसीरुत्तस्दीक़ जो **अल्लाह** तआ़ला और उस की वहदानिय्यत और उस के अम्बिया और उस के रसूलों की और मरने के बा'द उठने की तस्दीक़ करे और अहकामे इलाहिय्यह बजा लाए। **67 :** या'नी आज़र बुत परस्त से। **68 :** या'नी इबादत मा'बूद की ग़ायत (इन्तिहा दरजे की) ता'ज़ीम है, इस का वोही मुस्तहिक़ हो सकता है जो साहिबे औसाफ़े कमाल और वलिय्ये नेअ़्म हो न कि बुत जैसी नाकारा मख़्लूक़, मुद्आ़ येह है कि **अल्लाह** وَاحِدٌ، لَاشَرِيۡكَ لَهٗ के सिवा कोई मुस्तहिक़्के इबादत नहीं। **69 :** मेरे रब की तरफ़ से मा'रिफ़ते इलाही का **70 :** मेरा दीन क़बूल कर ! **71 :** जिस से तू क़ुर्बे इलाही की मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच सके। **72 :** और उस की फ़रमां

www.dawateislami.net

إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ ٱلرَّحۡمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيۡطَٰنِ وَلِيًّا ٤٥

मैं डरता हूं कि तुझे रह्मान का कोई अ़ज़ाब पहुंचे तो तू शैतान का रफ़ीक़ हो जाए[73]

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنتَ عَنۡ ءَالِهَتِي يَٰٓإِبۡرَٰهِيمُۖ لَئِن لَّمۡ تَنتَهِ لَأَرۡجُمَنَّكَۖ

बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू[74] बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा

وَٱهۡجُرۡنِي مَلِيًّا ٤٦ قَالَ سَلَٰمٌ عَلَيۡكَۖ سَأَسۡتَغۡفِرُ لَكَ رَبِّيٓۖ إِنَّهُۥ كَانَ

और मुझ से ज़माना दराज़ तक बे अ़लाक़ा हो जा[75] कहा बस तुझे सलाम है[76] क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से मुआफ़ी मांगूंगा[77] बेशक वोह

بِي حَفِيًّا ٤٧ وَأَعۡتَزِلُكُمۡ وَمَا تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَأَدۡعُواْ رَبِّي

मुझ पर मेहरबान है और मैं एक किनारे हो जाऊंगा[78] तुम से और उन सब से जिन को **अल्लाह** के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा[79]

عَسَىٰٓ أَلَّآ أَكُونَ بِدُعَآءِ رَبِّي شَقِيًّا ٤٨ فَلَمَّا ٱعۡتَزَلَهُمۡ وَمَا يَعۡبُدُونَ

क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बद बख़्त न होउं[80] फिर जब उन से और **अल्लाह** के सिवा उन के

مِن دُونِ ٱللَّهِ وَهَبۡنَا لَهُۥٓ إِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَۖ وَكُلًّا جَعَلۡنَا نَبِيًّا ٤٩ وَ

मा'बूदों से किनारा कर गया[81] हम ने उसे इस्हाक़[82] और या'क़ूब[83] अ़ता किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला किया और

وَهَبۡنَا لَهُم مِّن رَّحۡمَتِنَا وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ لِسَانَ صِدۡقٍ عَلِيًّا ٥٠ وَٱذۡكُرۡ

हम ने उन्हें अपनी रह्मत अ़ता की[84] और उन के लिये सच्ची बुलन्द नामवरी रखी[85] और किताब में

فِي ٱلۡكِتَٰبِ مُوسَىٰٓۚ إِنَّهُۥ كَانَ مُخۡلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ٥١ وَنَٰدَيۡنَٰهُ

मूसा को याद करो बेशक वोह चुना हुवा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला और उसे हम ने

مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ ٱلۡأَيۡمَنِ وَقَرَّبۡنَٰهُ نَجِيًّا ٥٢ وَوَهَبۡنَا لَهُۥ مِن رَّحۡمَتِنَآ

तूर की दाह्नी जानिब से निदा फ़रमाई[86] और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया[87] और अपनी रह्मत से उसे उस का भाई हारून

बरदारी कर के कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला न हो। **73 :** और ला'नत व अ़ज़ाब में उस का साथी हो। इस नसीह़ते लुत़्फ़ आमेज़ और हिदायते दिल पज़ीर से आज़र ने नफ़्अ़ न उठाया और इस के जवाब में **74 :** बुतों की मुख़ालफ़त और उन को बुरा कहने और उन के उ़यूब बयान करने से **75 :** ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अम्न में रहे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام ने **76 :** येह सलामे मुतारकत था। **77 :** कि वोह तुझे तौफ़ीक़े तौबा व ईमान दे कर तेरी मग़्फ़िरत करे। **78 :** शहरे बाबिल से शाम की त़रफ़ हिजरत कर के **79 :** जिस ने मुझे पैदा किया और मुझ पर एह़सान फ़रमाए। **80 :** इस में ता'रीज़ है कि जैसे तुम बुतों की पूजा कर के बद नसीब हुए, ख़ुदा के परस्तार के लिये येह बात नहीं, उस की बन्दगी करने वाला शक़ी व मह़रूम नहीं होता। **81 :** अर्ज़े मुक़द्दसा की त़रफ़ हिजरत कर के **82 :** फ़रज़न्द **83 :** फ़रज़न्द के फ़रज़न्द या'नी पोते। **फ़ाएदा :** इस में इशारा है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ इतनी दराज़ हुई कि आप ने अपने पोते ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيۡهِ السَّلَام को देखा। इस आयत में येह बताया गया कि **अल्लाह** के लिये हिजरत करने और अपने घरबार को छोड़ने की येह जज़ा मिली कि **अल्लाह** तआ़ला ने बेटे और पोते अ़ता फ़रमाए। **84 :** कि अम्वाल व औलाद ब कसरत इनायत किये। **85 :** कि हर दीन वाले मुसल्मान हों ख़्वाह

اَخَاهُ هٰرُوۡنَ نَبِيًّا ﴿۵۳﴾ وَاذۡكُرۡ فِى الۡكِتٰبِ اِسۡمٰعِيۡلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ

अ़ता किया ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी)[88] और किताब में इस्माईल को याद करो[89] बेशक वोह वा'दे

الۡوَعۡدِ وَكَانَ رَسُوۡلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ ۚ وَكَانَ يَاۡمُرُ اَهۡلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۖ

का सच्चा था[90] और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता और अपने घर वालों को[91] नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता

وَكَانَ عِنۡدَ رَبِّهٖ مَرۡضِيًّا ﴿۵۵﴾ وَاذۡكُرۡ فِى الۡكِتٰبِ اِدۡرِيۡسَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ

और अपने रब को पसन्द था[92] और किताब में इदरीस को याद करो[93] बेशक वोह

صِدِّيۡقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾ ۙ وَّرَفَعۡنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ

सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया[94] येह हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान

यहूदी ख़्वाह नसरानी सब उन की सना करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उन की आल पर दुरूद पढ़ा जाता है। **86 :** "तूर" एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र व मद्यन के दरमियान है। हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام को मद्यन से आते हुए तूर की उस जानिब से जो हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام के दाहनी तरफ़ थी एक दरख़्त से निदा दी गई : "يٰمُوۡسٰٓى اِنِّىۡۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ" ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूं तमाम जहानों का पालने वाला। **87 :** मर्तबए कुर्ब अ़ता फ़रमाया हिजाब मुरतफ़अ़ किये यहां तक कि आप ने सरीरे अक़्लाम (क़लमों के लिखने की आवाज़) सुनी और आप की क़द्रो मन्ज़िलत बुलन्द की गई और आप से अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़रमाया। **88 :** जब कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब ! मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना। अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया और हज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام से बड़े थे। **89 :** जो हज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام के फ़रज़न्द और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم के जद हैं। **90 :** अम्बिया सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं। एक मरतबा किसी मक़ाम पर आप से कोई शख़्स कह गया था कि आप यहीं ठहरे रहिये जब तक मैं वापस आऊं। आप उस जगह उस के इन्तिज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे। आप ने सब्र का वा'दा किया था, ज़ब्ह के मौक़अ़ पर इस शान से इस को वफ़ा फ़रमाया कि سُبۡحٰنَ اللّٰه। **91 :** और अपनी क़ौम जुरहुम को जिन की तरफ़ आप मब्ऊ़स थे **92 :** ब सबब अपने ताअ़त व आ'माल व सब्रो इस्तिक़्लाल व अह़वाल व ख़िसाल के। **93 :** आप का नाम अख़्नूख़ है, आप हज़रते नूह عَلَيۡهِ السَّلَام के वालिद के दादा हैं, हज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام के बा'द आप ही पहले रसूल हैं, आप के वालिद हज़रते शीस बिन आदम عَلَيۡهِ السَّلَام हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वोह आप ही हैं, कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई, आप से पहले लोग खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं, येह सब काम आप ही से शुरूअ़ हुए। अल्लाह तआ़ला ने आप पर तीस सह़ीफ़े नाज़िल किये और कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्स के बाइ़स आप का नाम इदरीस हुवा। **94 :** दुन्या में उन्हें उ़लुव्वे मर्तबत अ़ता किया या येह मा'ना हैं कि आस्मान पर उठा लिया और येही सह़ीह़ तर है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज हज़रते इदरीस عَلَيۡهِ السَّلَام को आस्माने चहारुम पर देखा। हज़रते का'ब अह़बार वग़ैरा से मरवी है कि हज़रते इदरीस عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है, तुम मेरी रूह क़ब्ज़ कर के दिखाओ ! उन्हों ने इस हुक्म की ता'मील की और रूह क़ब्ज़ कर के उसी वक़्त आप की तरफ़ लौटा दी आप ज़िन्दा हो गए। फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, येह भी किया गया, जहन्नम देख कर आप ने मालिक दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं इस पर गुज़रना चाहता हूं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप उस पर गुज़रे, फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ ! वोह आप को जन्नत में ले गए, आप दरवाज़े खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुए, थोड़ी देर इन्तिज़ार कर के मलकुल मौत ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये ! फ़रमाया : अब मैं यहां से कहीं न जाऊंगा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है : "كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ" वोह मैं चख ही चुका हूं और येह फ़रमाया है : "وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا" कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका, अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है : "وَمَا هُمۡ مِّنۡهَا بِمُخۡرَجِيۡنَ" कि वोह जन्नत से निकाले न जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यूं कहते हो ? अल्लाह तआ़ला ने मलकुल मौत को वह्य फ़रमाई कि हज़रते इदरीस عَلَيۡهِ السَّلَام ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वोह मेरे इज़्न से जन्नत में दाख़िल हुए, उन्हें छोड़ दो ! वोह जन्नत ही में रहेंगे, चुनान्चे, आप वहां ज़िन्दा हैं।

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِمۡ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنۡ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ۖ وَّمِنۡ

किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से[95] और उन में जिन को हम ने नूह़ के साथ सुवार किया था[96] और

ذُرِّيَّةِ اِبۡرٰهِيۡمَ وَاِسۡرَآءِيۡلَ ۖ وَمِمَّنۡ هَدَيۡنَا وَاجۡتَبَيۡنَا ؕ اِذَا تُتۡلٰى

इब्राहीम[97] और या'क़ूब की औलाद से[98] और उन में से जिन्हें हम ने राह दिखाई और चुन लिया[99] जब उन पर

عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُ الرَّحۡمٰنِ خَرُّوۡا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ۵۸ فَخَلَفَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ السجدة ٥

रह़मान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते[100] तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़लफ़

خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ۙ ۵۹

आए[101] जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[102] तो अ़न्क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे[103]

اِلَّا مَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ وَلَا

मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें

يُظۡلَمُوۡنَ شَيۡـًٔا ۙ ۶۰ جَنّٰتِ عَدۡنِ ِۨالَّتِىۡ وَعَدَ الرَّحۡمٰنُ عِبَادَهٗ بِالۡغَيۡبِ ؕ

कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा[104] बसने के बाग़ जिन का वा'दा रह़मान ने अपने[105] बन्दों से ग़ैब में किया[106]

اِنَّهٗ كَانَ وَعۡدُهٗ مَاۡتِيًّا ۶۱ لَا يَسۡمَعُوۡنَ فِيۡهَا لَغۡوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمۡ

बेशक उस का वा'दा आने वाला है वोह उस में कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम[107] और उन्हें

رِزۡقُهُمۡ فِيۡهَا بُكۡرَةً وَّعَشِيًّا ۶۲ تِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِىۡ نُوۡرِثُ مِنۡ عِبَادِنَا

उस में उन का रिज़्क़ है सुब्ह़ो शाम[108] येह वोह बाग़ है जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे

95 : या'नी ह़ज़रते इदरीस व ह़ज़रते नूह़। **96 :** या'नी इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام जो ह़ज़रते नूह़ عَلَيۡهِ السَّلَام के पोते और आप के फ़रज़न्द साम के फ़रज़न्द हैं। **97 :** की औलाद से ह़ज़रते इस्माईल व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते या'क़ूब **98 :** ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़या और ह़ज़रते ईसा صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلَيۡهِمۡ وَسَلَامُهٗ **99 :** शर्ते शरीअ़त व कश्फ़े ह़क़ीक़त के लिये। **100 : अल्लाह** तआ़ला ने इन आयात में ख़बर दी कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि क़ुरआने पाक ब ख़ुशूए़ क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तह़ब है। **101 :** मिस्ले यहूदो नसारा वग़ैरा के **102 :** और बजाए त़ाअ़ते इलाही के मआ़सी को इख़्तियार किया **103 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : **ग़य्य** जहन्नम में एक वादी है जिस की गरमी से जहन्नम की वादियां भी पनाह मांगती हैं। येह उन लोगों के लिये है जो ज़िना के आ़दी और इस पर मुसिर (डटे हुए) हों और जो शराब के आ़दी हों और जो सूद ख़्वार सूद के ख़ूगर (आ़दी) हों और जो वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले हों और जो झूटी गवाही देने वाले हों। **104 :** और उन के आ'माल की जज़ा में कुछ भी कमी न की जाएगी। **105 :** ईमानदार सालेह़ व ताइब **106 :** या'नी इस ह़ाल में कि जन्नत उन से ग़ाइब है और उन की नज़र के सामने नहीं या इस ह़ाल में कि वोह जन्नत से ग़ाइब हैं इस का मुशाहदा नहीं करते। **107 :** मलाएका का या आपस में एक दूसरे का। **108 :** या'नी अ़लद्वाम क्यूं कि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं, अहले जन्नत हमेशा नूर ही में रहेंगे या मुराद येह है कि दुन्या के दिन की मिक़्दार में दो मरतबा बिहिश्ती ने'मतें उन के सामने पेश की जाएंगी।

السجدة ٥

www.dawateislami.net

مَنۡ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمۡرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡنَا وَ

जो परहेज़ गार है (और जिब्रील ने महबूब से अ़र्ज़ की)[109] हम फ़िरिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और

مَا خَلۡفَنَا وَمَا بَيۡنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ ۚ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

जो हमारे पीछे और जो इस के दरमियान है[110] और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं[111] आस्मानों और ज़मीन और

وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا فَاعۡبُدۡهُ وَاصۡطَبِرۡ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلۡ تَعۡلَمُ لَهٗ

जो कुछ इन के बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उस की बन्दगी पर साबित रहो क्या उस के नाम का दूसरा

سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ ع وَيَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوۡفَ اُخۡرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا ع ١٥ ٧

जानते हो[112] और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अ़न्क़रीब जिला कर निकाला जाऊंगा[113] और क्या

يَذۡكُرُ الۡاِنۡسَانُ اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ وَلَمۡ يَكُ شَيۡـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ

आदमी को याद नहीं कि हम ने इस से पहले उसे बनाया और वोह कुछ न था[114] तो तुम्हारे रब की क़सम हम

لَنَحۡشُرَنَّهُمۡ وَالشَّيٰطِيۡنَ ثُمَّ لَنُحۡضِرَنَّهُمۡ حَوۡلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ۚ ثُمَّ

इन्हें[115] और शैत़ानों सब को घेर लाएंगे[116] और इन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे फिर

لَنَنۡزِعَنَّ مِنۡ كُلِّ شِيۡعَةٍ اَيُّهُمۡ اَشَدُّ عَلَى الرَّحۡمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ۚ ثُمَّ لَنَحۡنُ

हम[117] हर गुरौह से निकालेंगे जो उन में रह़मान पर सब से ज़ियादा बेबाक होगा[118] फिर हम ख़ूब

اَعۡلَمُ بِالَّذِيۡنَ هُمۡ اَوۡلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ

जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़ियादा लाइक़ हैं और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो[119] तुम्हारे

109 शाने नुज़ूल : बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने जिब्रील से फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! तुम जितना हमारे पास आया करते हो इस से ज़ियादा क्यूं नहीं आते ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **110 :** या'नी तमाम अमाकिन का वोही मालिक है, हम एक मकान से दूसरे मकान की त़रफ़ नक़्लो ह़रकत करने में उस के हुक्म व मशिय्यत के ताबेअ़ हैं, वोह हर ह़रकत व सुकून का जानने वाला और ग़फ़्लत व निस्यान से पाक है। **111 :** जब चाहे हमें आप की ख़िदमत में भेजे। **112 :** या'नी किसी को उस के साथ इस्मी शिर्कत भी नहीं और उस की वह्दानिय्यत इतनी ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने भी अपने किसी मा'बूदे बात़िल का नाम "अल्लाह" नहीं रखा। **113 :** इन्सान से यहां मुराद वोह कुफ़्फ़ार हैं जो मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के मुन्किर थे जैसे कि उबय बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा, इन्हीं लोगों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और येही इस का शाने नुज़ूल है। **114 :** तो जिस ने मा'दूम (ग़ैर मौजूद) को मौजूद फ़रमाया उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा कर देना क्या तअ़ज्जुब। **115 :** या'नी मुन्किरीने बअ़्स को **116 :** या'नी कुफ़्फ़ार को उन के गुमराह करने वाले शयात़ीन के साथ। इस त़रह़ कि हर काफ़िर शैत़ान के साथ एक ज़न्जीर में जकड़ा होगा **117 :** कुफ़्फ़ार के **118 :** या'नी दुख़ूले नार में जो सब से ज़ियादा सरकश और कुफ़्र में अशद (ज़ियादा सख़्त) होगा वोह मुक़द्दम किया जाएगा। बा'ज़ रिवायात में है कि कुफ़्फ़ार सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़न्जीरों में जकड़े त़ौक़ डाले हुए ह़ाज़िर किये जाएंगे फिर जो कुफ़्रो सरकशी में अशद होंगे वोह पहले जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **119 :** नेक हो या बद, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन ! गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। ह़सन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने

www.dawateislami.net

عَلٰى رَبِّكَ حَتۡمًا مَّقۡضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيۡنَ

रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है[120] फिर हम डर वालों को बचा लेंगे[121] और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे

فِيۡهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

घुटनों के बल गिरे और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाती हैं काफ़िर[122] मुसल्मानों

لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا ۙ اَىُّ الۡفَرِيۡقَيۡنِ خَيۡرٌ مَّقَامًا وَّاَحۡسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمۡ

से कहते हैं कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है[123] और हम

اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ هُمۡ اَحۡسَنُ اَثَاثًا وَّرِءۡيًا ﴿٧٤﴾ قُلۡ مَنۡ كَانَ

ने उन से पहले कितनी संगतें खपा दीं[124] कि वोह उन से भी सामान और नुमूद (देखने) में बेहतर थे तुम फ़रमाओ जो गुमराही

فِى الضَّلٰلَةِ فَلۡيَمۡدُدۡ لَهُ الرَّحۡمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوۡا مَا يُوۡعَدُوۡنَ اِمَّا

में हो तो उसे रह़मान ख़ूब ढील दे[125] यहां तक कि जब वोह देखें वोह चीज़ जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है या

الۡعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضۡعَفُ

तो अ़ज़ाब[126] या क़ियामत[127] तो अब जान लेंगे कि किस का बुरा दरजा है और किस की फ़ौज

جُنۡدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيۡدُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اهۡتَدَوۡا هُدًى ؕ وَالۡبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

कमज़ोर[128] और जिन्हों ने हिदायत पाई[129] अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा[130] और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का[131]

خَيۡرٌ عِنۡدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيۡرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَ

तेरे रब के यहां सब से बेहतर सवाब और सब से भला अन्जाम[132] तो क्या तुम ने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुन्किर हुवा और

قَالَ لَاُوۡتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الۡغَيۡبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ

कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे[133] क्या ग़ैब को झांक आया है[134] या रह़मान के पास कोई क़रार

से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है। **120 :** या'नी वुरूदे जहन्नम (दोज़ख़ पर से गुज़रना) क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है। **121 :** या'नी ईमानदारों को **122 :** मिस्ल नज़र बिन ह़ारिस वग़ैरा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बनाव सिंघार कर के बालों में तेल डाल कर कंघियां कर के उ़म्दा लिबास पहन कर फ़ख़्र व तकब्बुर के साथ ग़रीब फ़क़ीर **123 :** मुद्दआ़ येह है कि जब आयात नाज़िल की जाती हैं और दलाइल व बराहीन पेश किये जाते हैं तो कुफ़्फ़ार उन में तो फ़िक्र नहीं करते और उन से फ़ाएदा नहीं उठाते और बजाए इस के दौलतो माल और लिबास व मकान पर फ़ख़्र व तकब्बुर करते हैं। **124 :** उम्मतें हलाक कर दीं **125 :** दुन्या में उस की उ़म्र दराज़ कर के और उस को उस की गुमराही व तुग़्यान में छोड़ कर **126 :** दुन्या का क़त्ल व गिरिफ़्तारी **127 :** जो त़रह़ त़रह़ की रुस्वाई और अ़ज़ाब पर मुश्तमिल है। **128 :** कुफ़्फ़ार की शैत़ानी फ़ौज या मुसल्मानों का मलकी लश्कर। इस में मुश्रिकीन के इस क़ौल का रद है जो उन्हों ने कहा था कि कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है। **129 :** और ईमान से मुशर्रफ़ हुए **130 :** इस पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा कर और मज़ीद बसीरत व तौफ़ीक़ दे कर। **131 :** त़ाअ़तें और आख़िरत के तमाम आ'माल और पंजगाना नमाज़ें और अल्लाह तआ़ला की

www.dawateislami.net

عَهۡدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ؕ سَنَكۡتُبُ مَا يَقُوۡلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الۡعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

(अ़ह्द) रखा है हरगिज़ नहीं[135] अब हम लिख रखेंगे जो वोह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अ़ज़ाब देंगे

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوۡلُ وَيَاۡتِيۡنَا فَرۡدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

और जो चीज़ें कह रहा है[136] उन के हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा[137] और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिये[138]

لِّيَكُوۡنُوۡا لَهُمۡ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ؕ سَيَكۡفُرُوۡنَ بِعِبَادَتِهِمۡ وَيَكُوۡنُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ

कि वोह उन्हें ज़ोर दें[139] हरगिज़ नहीं[140] कोई दम जाता है कि वोह[141] उन की बन्दगी से मुन्किर होंगे और उन के मुख़ालिफ़

ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّاۤ اَرۡسَلۡنَا الشَّيٰطِيۡنَ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ تَؤُزُّهُمۡ اَزًّا ﴿٨٣﴾ ع ١٥

हो जाएंगे[142] क्या तुम ने न देखा कि हम ने काफ़िरों पर शैतान भेजे[143] कि वोह इन्हें ख़ूब उछालते हैं[144]

فَلَا تَعۡجَلۡ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمۡ عَدًّا ﴿٨٤﴾ ج يَوۡمَ نَحۡشُرُ الۡمُتَّقِيۡنَ اِلَى

तो तुम इन पर जल्दी न करो हम तो इन की गिनती पूरी करते हैं[145] जिस दिन हम परहेज़ गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे

الرَّحۡمٰنِ وَفۡدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوۡقُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرۡدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمۡلِكُوۡنَ

मेहमान बना कर[146] और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे[147] लोग शफ़ाअ़त

الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ عَهۡدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ

के मालिक नहीं मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार कर रखा है[148] और काफ़िर बोले[149]

तस्बीह़ व तह़मीद और उस का ज़िक्र और तमाम आ'माले सालिह़ा येह सब बाक़ियातुस्सालिह़ात हैं कि मोमिन के लिये बाक़ी रहते हैं और काम आते हैं। **132 :** ब ख़िलाफ़े आ'माले कुफ़्फ़ार के कि वोह सब निकम्मे और बातिल हैं। **133 शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत का ज़मानए जाहिलिय्यत में आ़स बिन वाइल सह्मी पर क़र्ज़ था, वोह उस के पास तक़ाज़े को गए तो आ़स ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ न अदा करूंगा जब तक कि तुम सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फिर न जाओ और कुफ़्र इख़्तियार न करो। ह़ज़रते ख़ब्बाब ने फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता यहां तक कि तू मरे और मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठे। वोह कहने लगा कि क्या मैं मरने के बा'द फिर उठूंगा ? ह़ज़रते ख़ब्बाब ने कहा : हां। आ़स ने कहा : तो फिर मुझे छोड़िये यहां तक कि मैं मर जाऊं और मरने के बा'द फिर ज़िन्दा होउं और मुझे माल व औलाद मिले जब ही आप का क़र्ज़ अदा करूंगा, इस पर येह आयाते करीमा नाज़िल हुई। **134 :** और उस ने लौह़े मह़फ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में इस को माल व औलाद मिलेगी **135 :** ऐसा नहीं है। तो **136 :** या'नी माल व औलाद इन सब से उस की मिल्क और उस का तसर्रुफ़ उस के हलाक होने से उठ जाएगा और **137 :** कि न उस के पास माल होगा न औलाद और उस का येह दा'वा करना झूटा हो जाएगा। **138 :** या'नी मुश्रिकों ने बुतों को मा'बूद बनाया और उन की इ़बादत करने लगे इस उम्मीद पर **139 :** और उन की मदद करें और उन्हें अ़ज़ाब से बचाएं **140 :** ऐसा हो ही नहीं सकता **141 :** बुत जिन्हें येह पूजते थे **142 :** उन्हें झुटलाएंगे और उन पर ला'नत करेंगे अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़बान देगा और वोह कहेंगे : या रब ! इन्हें अ़ज़ाब कर। **143 :** या'नी शयातीन को इन पर छोड़ दिया और मुसल्लत कर दिया **144 :** और मआ़सी (ना फ़रमानी) पर उभारते हैं **145 :** आ'माल की जज़ा के लिये या सांसों की फ़ना के लिये या दिनों महीनों और बरसों की उस मीआ़द के लिये जो इन के अ़ज़ाब के वासिते मुक़र्रर है। **146 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मोमिनीने मुत्तक़ीन ह़श्र में अपनी क़ब्रों से सुवार कर के उठाए जाएंगे और उन की सुवारियों पर तिलाई मुरस्सअ़ ज़ीनें और पालान होंगे। **147 :** ज़िल्लतो इहानत के साथ ब सबब उन के कुफ़्र के। **148 :** या'नी जिन्हें शफ़ाअ़त का इज़्न मिल चुका है वोही शफ़ाअ़त करेंगे या येह मा'ना हैं कि शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिनीन की होगी और वोही इस से फ़ाएदा उठाएंगे। ह़दीस शरीफ़ में है : जो ईमान लाया

www.dawateislami.net

الرَّحۡمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدۡ جِئۡتُمۡ شَيۡـًٔا اِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ

रहमान ने औलाद इख़्तियार की बेशक तुम हद की भारी बात लाए[150] क़रीब है कि आस्मान इस से फट

مِنۡهُ وَتَنۡشَقُّ الۡاَرۡضُ وَتَخِرُّ الۡجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ اَنۡ دَعَوۡا لِلرَّحۡمٰنِ

पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएं ढ (मिस्मार हो) कर[151] इस पर कि उन्हों ने रहमान के लिये

وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لِلرَّحۡمٰنِ اَنۡ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ اِنۡ كُلُّ مَنۡ فِى

औलाद बताई और रहमान के लिये लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे[152] आस्मानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحۡمٰنِ عَبۡدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدۡ اَحۡصٰىهُمۡ وَعَدَّهُمۡ

में जितने हैं सब उस के हुज़ूर बन्दे हो कर हाज़िर होंगे[153] बेशक वोह उन का शुमार जानता है और उन को एक एक कर के

عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمۡ اٰتِيۡهِ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَرۡدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

गिन रखा है[154] और उन में हर एक रोज़े क़ियामत उस के हुज़ूर अकेला हाज़िर होगा[155] बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ سَيَجۡعَلُ لَهُمُ الرَّحۡمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ

काम किये अन्क़रीब उन के लिये रहमान महब्बत कर देगा[156] तो हम ने येह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम इस

بِهِ الۡمُتَّقِيۡنَ وَتُنۡذِرَ بِهٖ قَوۡمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ

से डर वालों को ख़ुश ख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इस से डर सुनाओ और हम ने इन से पहली कितनी संगतें खपाईं[157]

जिस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा उस के लिये **अल्लाह** के नज़्दीक अ़हद है। **149 :** या'नी यहूदी व नसरानी व मुश्रिकीन जो फ़िरिश्तों को **अल्लाह** की बेटियां कहते थे कि **150 :** और इन्तिहा दरजे का बातिल व निहायत सख़्त व शनीअ़ कलिमा तुम ने मुंह से निकाला **151 :** या'नी येह कलिमा ऐसी बे अदबी व गुस्ताख़ी का है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाए तो इस पर तमाम जहान का निज़ाम दरहम बरहम कर दे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार ने जब येह गुस्ताख़ी की और ऐसा बे बाकाना कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्नो इन्स के सिवा आस्मान, ज़मीन, पहाड़ वग़ैरा तमाम ख़ल्क़ परेशानी से बेचैन हो गई और क़रीब हलाकत के पहुंच गई, मलाएका को ग़ज़ब हुवा और जहन्नम को जोश आया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाई। **152 :** वोह इस से पाक है और उस के लिये औलाद होना मुहाल है मुम्किन नहीं। **153 :** बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जम्अ़ हो ही नहीं सकता और औलाद मम्लूक (ग़ुलाम) नहीं होती तो जो मम्लूक है हरगिज़ औलाद नहीं। **154 :** सब उस के इ़ल्म में महसूर व मुहात (घिरे हुए) हैं और हर एक के अन्फ़ास, अय्याम, आसार और तमाम अह़वाल और जुम्ला उमूर उस के शुमार में हैं, उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं, सब उस की तदबीरो क़ुदरत के तह़्त में हैं। **155 :** बिग़ैर माल व औलाद और मुईन व नासिर के। **156 :** या'नी अपना महबूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उन की महब्बत डाल देगा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे को महबूब करता है तो जिब्रील से फ़रमाता है कि फ़ुलाना मेरा महबूब है, जिब्रील उस से महब्बत करने लगते हैं, फिर हज़रते जिब्रील आस्मानों में निदा करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां को महबूब रखता है, सब उस को महबूब रखें, तो आस्मान वाले उस को महबूब रखते हैं, फिर ज़मीन में उस की मक़्बूलिय्यते आ़म कर दी जाती है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मोमिनीने सालिह़ीन व औलियाए कामिलीन की मक़्बूलिय्यते आ़म्मा उन की महबूबिय्यत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और हज़रते सुल्तान निज़ामुद्दीन देहलवी और हज़रते सुल्तान सय्यिद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم और दीगर हज़राते औलियाए कामिलीन की आ़म मक़्बूलिय्यतें उन की महबूबिय्यत की दलील हैं। **157 :** तक्ज़ीबे अम्बिया की वज्ह से कितनी बहुत सी उम्मतें हलाक कीं।

www.dawateislami.net

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾ ع ١٦ ٩ النصف

क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो[158]

اٰیاتها ١٣٥ | ٢٠ سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ ٤٥ | رکوعاتها ٨

सूरए त़ाहा मक्किय्या है, इस में एक सो पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

ऐ महबूब हम ने तुम पर येह क़ुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो[2] हां उस को नसीह़त जो

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ

डर रखता हो[3] उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला

عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا

उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है उस का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ

بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَ

इन के बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है[4] और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वोह तो भेद को जानता है और

اَخْفَى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ

उसे जो उस से भी ज़ियादा छुपा है[5] अल्लाह कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम[6] और कुछ तुम्हें

158 : वोह सब नेस्तो नाबूद (हलाक व बरबाद) कर दिये गए, इसी त़रह़ येह लोग अगर वोही त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे तो इन का भी वोही अन्जाम होगा। 1 : सूरए त़ाहा मक्किय्या है। इस में आठ रुकूअ़, एक सो पैंतीस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो इक्तालीस कलिमे और पांच हज़ार दो सो बयालीस हुरूफ़ हैं। 2 : और तमाम शब के क़ियाम की तक्लीफ़ उठाओ। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इ़बादत में बहुत जुह्द फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर ब हुक्मे इलाही अ़र्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राह़त दीजिये इस का भी ह़क़ है। एक क़ौल येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लोगों के कुफ़्र और उन के ईमान से महरूम रहने पर बहुत ज़ियादा मुतअस्सिफ़ व मुतह़स्सिर (अफ़्सुर्दा) रहते थे और ख़ातिरे मुबारक पर इस सबब से रन्जो मलाल रहा करता था, इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्जो मलाल की कोफ़्त न उठाएं, क़ुरआने पाक आप की मशक़्क़त के लिये नाज़िल नहीं किया गया है। 3 : वोह इस से नफ़्अ़ उठाएगा और हिदायत पाएगा। 4 : जो सातों ज़मीनों के नीचे है। मुराद येह है कि काएनात में जो कुछ है अ़र्श व समावात, ज़मीन व तह़्तुस्सरा कुछ हो, कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है। 5 : "سِر" या'नी भेद वोह है जिस को आदमी रखता और छुपाता है और इस से ज़ियादा पोशीदा वोह है जिस को इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उस से उस का इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुवा न उस तक ख़याल पहुंचा। एक क़ौल येह है कि भेद से मुराद वोह है जिस को इन्सानों से छुपाता है और इस से ज़ियादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है। एक क़ौल येह है कि भेद बन्दे का वोह है जिसे बन्दा ख़ुद जानता है और अल्लाह तआ़ला जानता है, इस से ज़ियादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिन को अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता।

www.dawateislami.net